अमर चित्र कथा

संभाजी

शिवाजी का बहादुर पुत्र

Vol 770 | ₹ 90

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी १० करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १००० + पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा
संजीवनी खेर
और
संपादकीय दल

चित्र
दिलीप कदम

संपादक
अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted June 2022,
ISBN 978-93-90055-67-8

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza,
Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri East, Mumbai 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : +91-22 49188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

शिवाजी के पुत्र सम्भाजी
सन् १६६६ की बात है, मराठा दुर्ग, राजगढ़ पर निराशा के बादल छाये थे। शिवाजी और उनका नन्हा पुत्र, सम्भाजी दूर दिल्ली में मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा बन्दी बना लिये गये थे।
शिवाजी की माता, जिजाबाई राज-काज की बागडोर सँभाले थी।
प्रभु, मेरे पुत्र और पौत्र को सकुशल घर लौटा लाओ।
तब, एक दिन –
रानी साहेब, दो साधु बाहर आपके दर्शनों के लिए खड़े हैं।
उन्हें अन्दर भेज दो। उनसे मिल कर मुझे खुशी होगी।
साधुओं ने अन्दर आ कर उनके चरण छुए।
तब उनमें से एक ने अपनी जटा अलग की।
यह तुम हो – बेटे!
हाँ, माँ साहेब, मैं ही हूँ। मुझे आशीर्वाद दीजिए!
ये तो महाराज शिवाजी हैं!

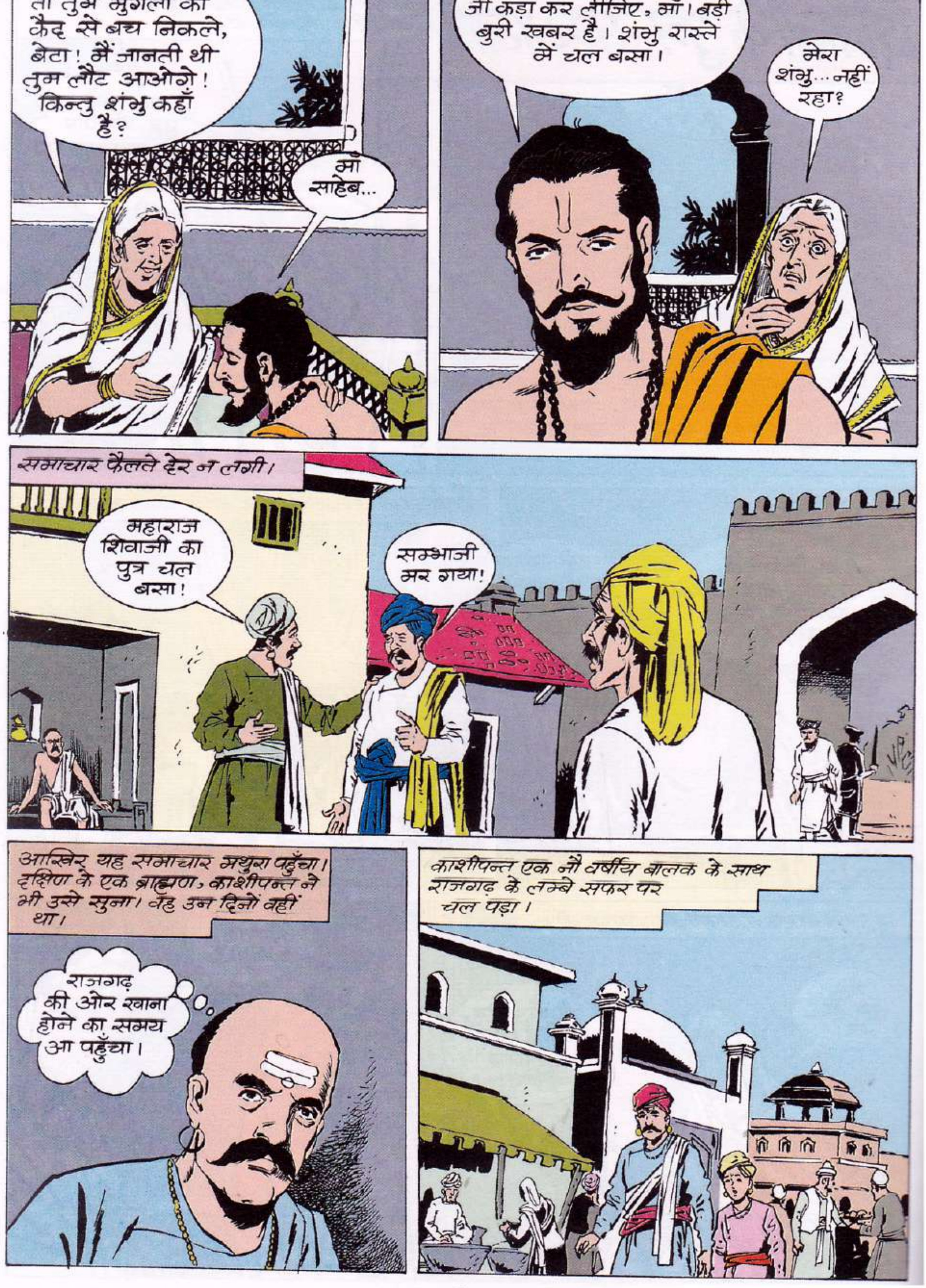

तो तुम मुगलों की कैद से बच निकले, बेटा! मैं जानती थी तुम लौट आओगे! किन्तु शंभु कहाँ है?
माँ साहेब...
जी कड़ा कर लीजिए, माँ। बड़ी बुरी खबर है। शंभु रास्ते में चल बसा।
मेरा शंभु... नहीं रहा?
समाचार फैलते देर न लगी।
महाराज शिवाजी का पुत्र चल बसा!
सम्भाजी मर गया!
आखिर यह समाचार मथुरा पहुँचा। दक्षिण के एक ब्राह्मण, काशीपन्त ने भी उसे सुना। वह उन दिनों वहीं था।
राजगढ़ की ओर रवाना होने का समय आ पहुँचा।
काशीपन्त एक नौ वर्षीय बालक के साथ राजगढ़ के लम्बे सफर पर चल पड़ा।

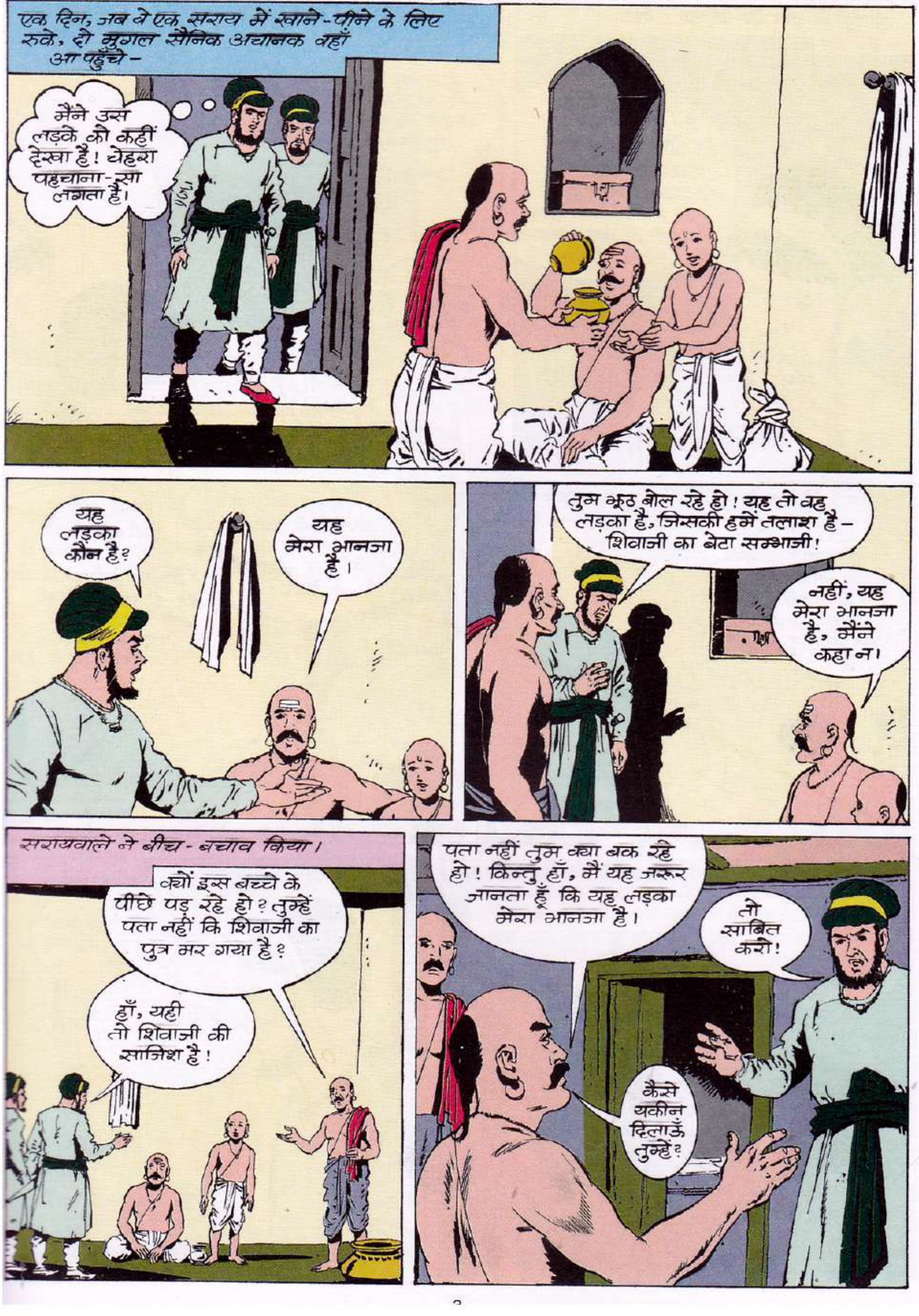
एक दिन, जब वे एक सराय में खाने-पीने के लिए रुके, दो मुगल सैनिक अचानक वहाँ आ पहुँचे –
मैंने उस लड़के को कहीं देखा है! चेहरा पहचाना-सा लगता है।
यह लड़का कौन है?
यह मेरा भानजा है।
तुम झूठ बोल रहे हो! यह तो वह लड़का है, जिसकी हमें तलाश है – शिवाजी का बेटा सम्भाजी!
नहीं, यह मेरा भानजा है, मैंने कहा न।
सरायवाले ने बीच-बचाव किया।
क्यों इस बच्चे के पीछे पड़ रहे हो? तुम्हें पता नहीं कि शिवाजी का पुत्र मर गया है?
हाँ, यही तो शिवाजी की साजिश है!
पता नहीं तुम क्या बक रहे हो! किन्तु हाँ, मैं यह जरूर जानता हूँ कि यह लड़का मेरा भानजा है।
तो साबित करो!
कैसे यकीन दिलाऊँ तुम्हें?

सिपाही ने कुछ देर सोचा। फिर–
हाँ, यह ठीक है! तुम ब्राह्मण हो, और अगर यह लड़का सचमुच तुम्हारा भानजा है तो तुम्हें इसके साथ खाना खाने में कोई एतराज नहीं होगा।
हम लोग तो भोजन करने जा ही रहे थे।
तब शुरू करो!
ब्राह्मण और लड़के को भोजन परोसा गया–
कोई ब्राह्मण किसी दूसरी जातिवाले के साथ कभी भी खाना नहीं खायेगा। अपने राजा की खातिर भी नहीं। फिर भी...?
अब अपने भानजे की पत्तल में से खाओ! तुम अगर वाकई इसके मामू हो तो तुम्हें कोई उज्र न होगा।
एक ब्राह्मण कभी भी किसी दूसरे की पत्तल में से नहीं खाता-अपने बेटे की पत्तल से भी नहीं! फिर भी, मैं तुम्हारा सन्देह दूर किये देता हूँ।
काशीपन्त ने लड़के की पत्तल में से एक कौर उठा लिया।
माफ कीजिए, आपको नाहक तकलीफ दी!

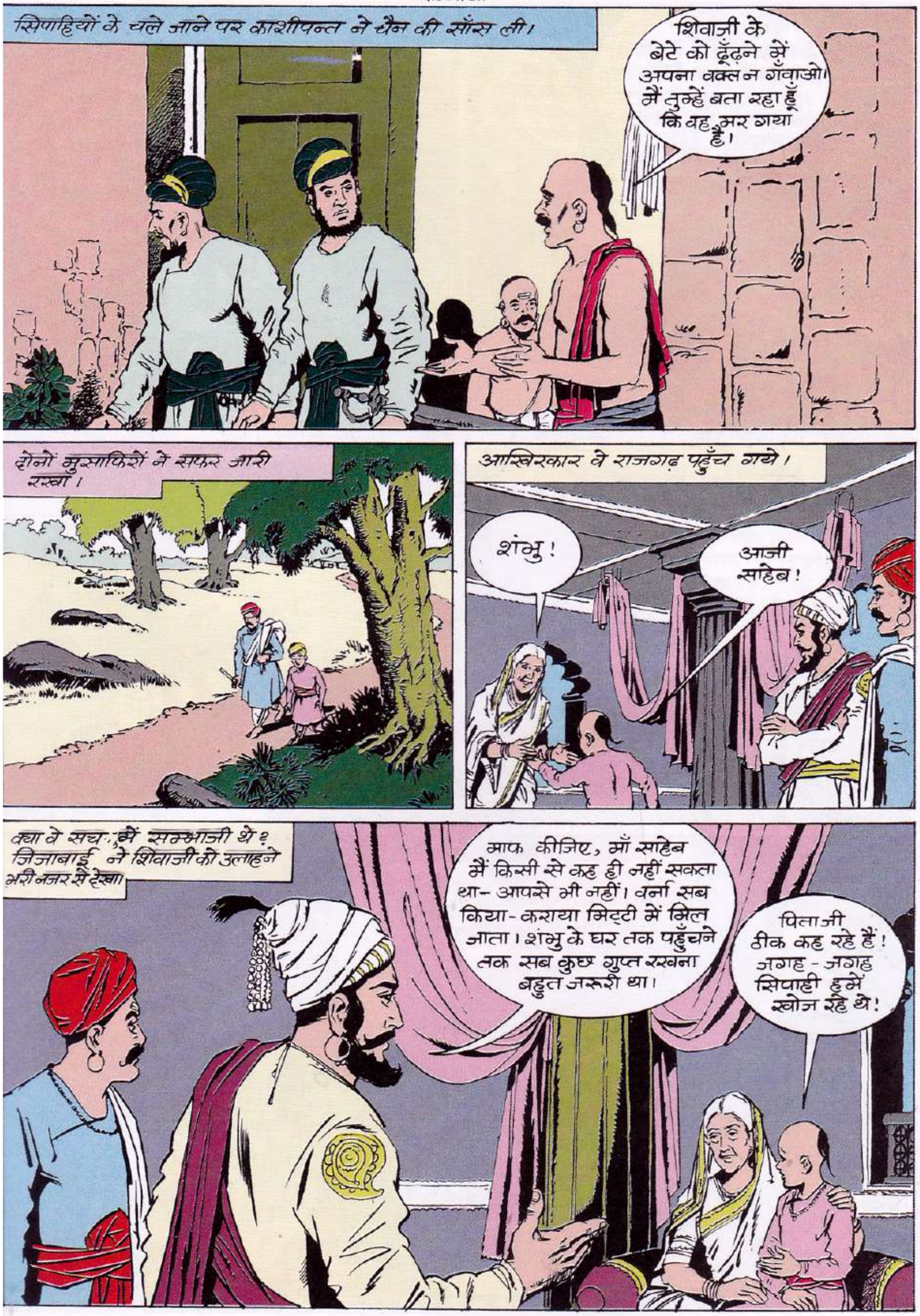
सिपाहियों के चले जाने पर काशीपन्त ने चैन की साँस ली।
शिवाजी के बेटे को ढूँढ़ने में अपना वक्त न गँवाओ। मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि वह मर गया है।
दोनों मुसाफिरों ने सफर जारी रखा।
आखिरकार वे राजगढ़ पहुँच गये।
शंभु!
आजी साहेब!
क्या वे सचमुच में सम्भाजी थे? जिजाबाई ने शिवाजी को उलाहने भरी नजर से देखा।
माफ कीजिए, माँ साहेब मैं किसी से कह ही नहीं सकता था– आपसे भी नहीं। वर्ना सब किया-कराया मिट्टी में मिल जाता। शंभु के घर तक पहुँचने तक सब कुछ गुप्त रखना बहुत जरूरी था।
पिताजी ठीक कह रहे हैं! जगह - जगह सिपाही हमें खोज रहे थे!

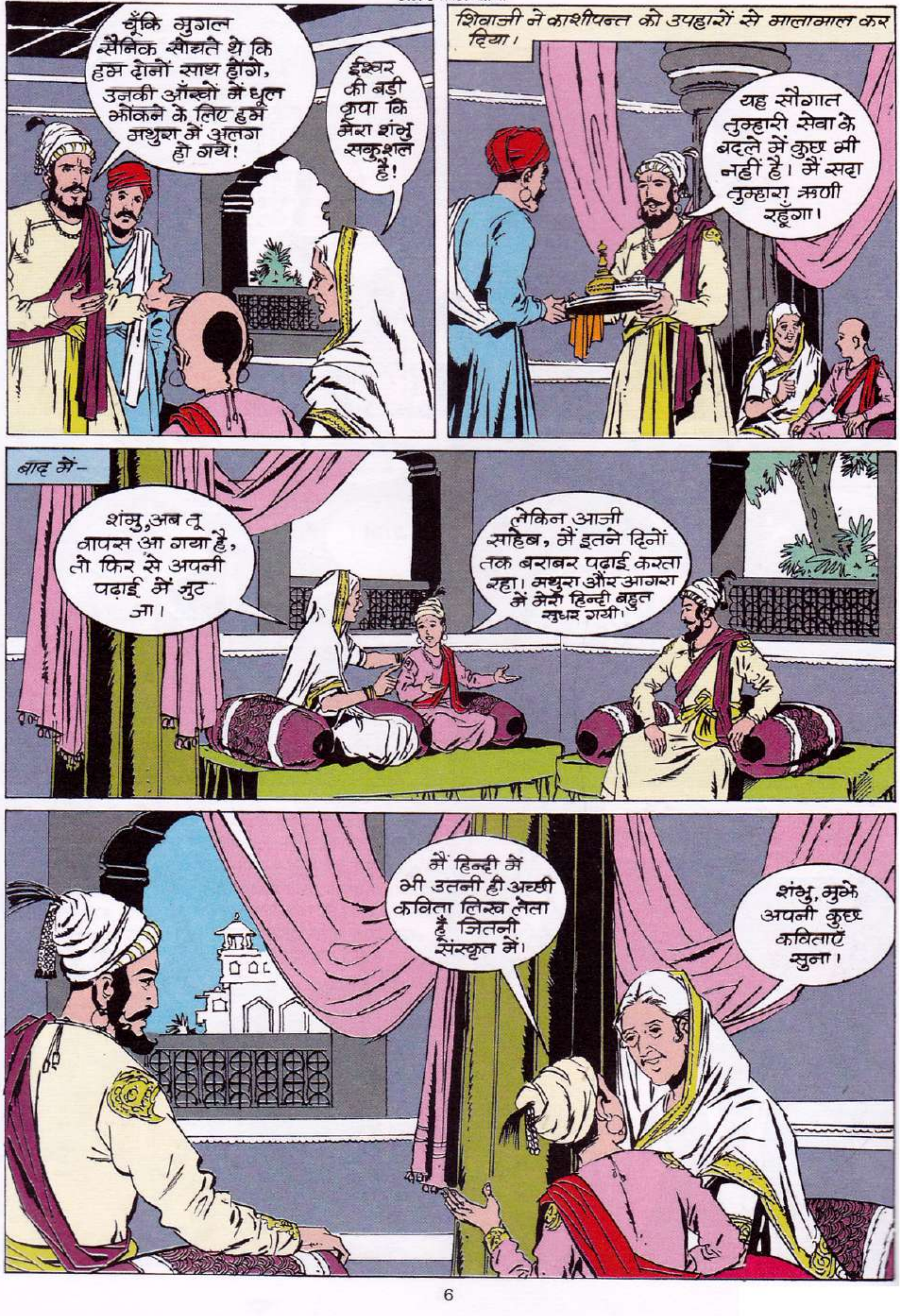
चूँकि मुगल सैनिक सोचते थे कि हम दोनों साथ होंगे, उनकी आँखों में धूल झोंकने के लिए हम मथुरा में अलग हो गये!
ईश्वर की बड़ी कृपा कि मेरा शंभु सकुशल है!
शिवाजी ने काशीपन्त को उपहारों से मालामाल कर दिया।
यह सौगात तुम्हारी सेवा के बदले में कुछ भी नहीं है। मैं सदा तुम्हारा ऋणी रहूँगा।
बाद में-
शंभु, अब तू वापस आ गया है, तो फिर से अपनी पढ़ाई में जुट जा।
लेकिन आजी साहेब, मैं इतने दिनों तक बराबर पढ़ाई करता रहा। मथुरा और आगरा में मेरी हिन्दी बहुत सुधर गयी।
मैं हिन्दी में भी उतनी ही अच्छी कविता लिख लेता हूँ जितनी संस्कृत में।
शंभु, मुझे अपनी कुछ कविताएँ सुना।

बेटा, यह समय कविताओं का नहीं है ! तुम्हें अपनी सैनिक शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।
जरूर, पिता जी।
तुम यह क्यों कह रहे हो, शिव बा? क्या तुम अपने हारे हुए किले फिर से जीतने का इरादा कर रहे हो?
हाँ, माँ साहेब, किन्तु अभी तुरन्त नहीं। मुझे अपनी सेना फिर से संगठित करने के लिए समय चाहिए।
शिवाजी ने कुछ दिनों शान्ति बनाये रखने के लिए औरंगजेब का प्रभुत्व स्वीकार किया। सम्भाजी ने अपने पिता का प्रतिनिधित्व किया और औरंगाबाद में एक जश्न में मुगल शाहजादा, शाह आलम से भेंट की।
आपका शुक्रिया अदा करने के लिए हमारी तरफ से यह हाथी और जवाहरात जड़ी यह तलवार आपकी नजर है।
आपने मेरी इज्जत बढ़ायी है।
बाद में, जब सम्भाजी राजगढ़ लौटे–
ठीक हुआ। अब हम थोड़े दिन युद्ध की तैयारी शान्ति से कर सकेंगे।
यह शान्ति तीन वर्ष तक चली– शिवाजी को तैयारी करने के लिए इतना समय काफी था। फिर उन्होंने धावा बोल दिया...
... और मुगलों को पहले हारे सभी किले जीत लिये।

जब सन १६७४ में शिवाजी का रायगढ़* में छत्रपति के रूप में अभिषेक हुआ, तो जनता हर्ष से भर उठी। सम्भाजी को युवराज घोषित किया गया।
इस घोषणा से केवल सम्भाजी की सौतेली माँ, रानी सोयराबाई अप्रसन्न थीं।
सम्भाजी आज युवराज है, कल छत्रपति बन जायेगा। और मेरे बेटे, राजाराम का क्या होगा?
राजाराम को अगला छत्रपति बनना चाहिए— न कि उस निकम्मे सम्भाजी को!
किन्तु सोयराबाई की एक न चली, क्योंकि सम्भाजी राजमाता जिजाबाई के दुलारे थे।
आजी, क्या आपको मालूम है कि कुछ अफसर उन लोगों से भी कर वसूलते हैं जो कर-मुक्त हैं?
शंभु, तुम्हें फौरन अपने पिता को यह बताना चाहिए।

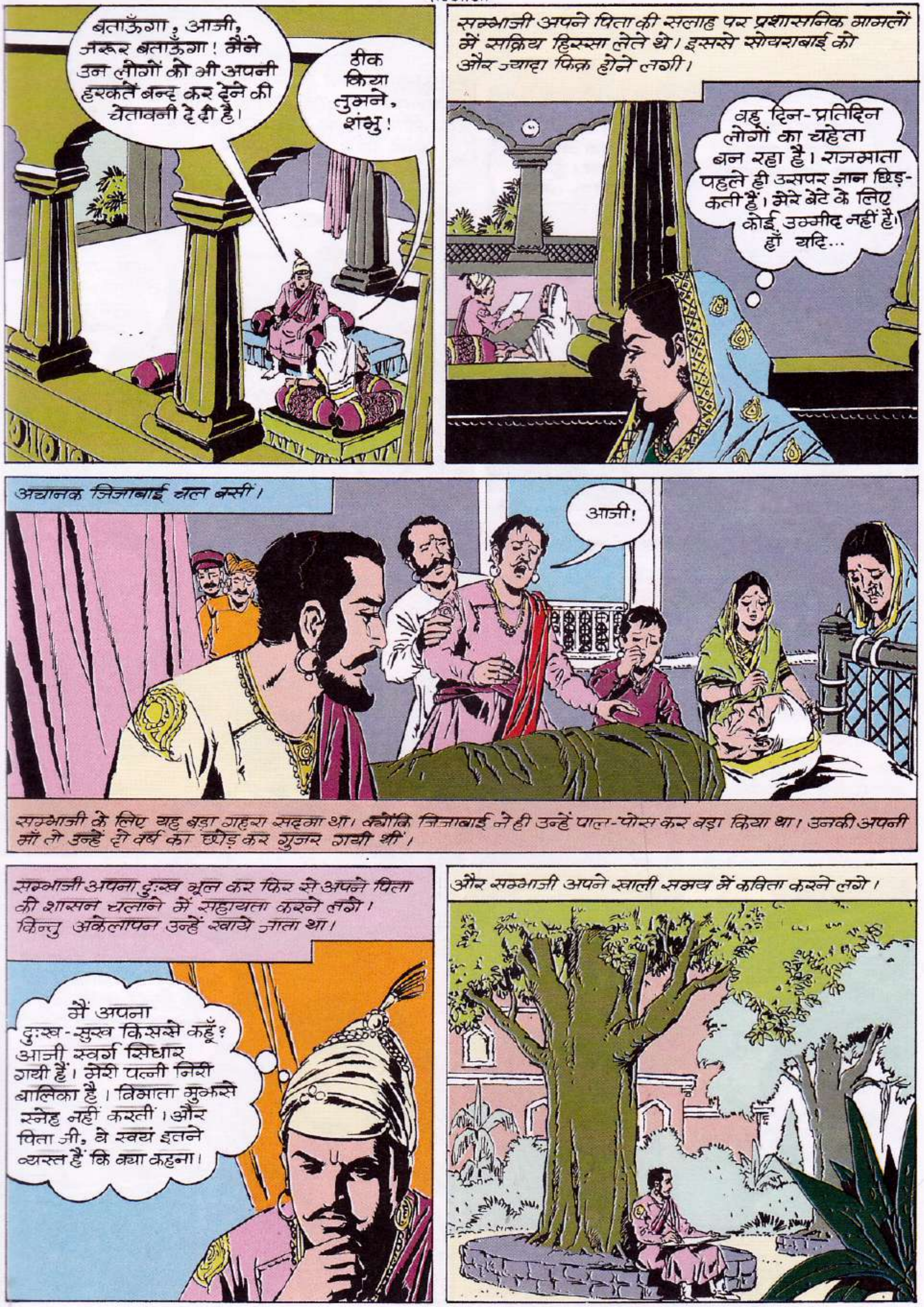
बताऊँगा, आजी, जरूर बताऊँगा! मैंने उन लोगों को भी अपनी हरकतें बन्द कर देने की चेतावनी दे दी है।
ठीक किया तुमने, शंभु!
सम्भाजी अपने पिता की सलाह पर प्रशासनिक मामलों में सक्रिय हिस्सा लेते थे। इससे सोयराबाई को और ज्यादा फिक्र होने लगी।
वह दिन-प्रतिदिन लोगों का चहेता बन रहा है। राजमाता पहले ही उसपर जान छिड़कती हैं। मेरे बेटे के लिए कोई उम्मीद नहीं है। हाँ यदि...
अचानक जिजाबाई चल बसीं।
आजी!
सम्भाजी के लिए यह बड़ा गहरा सदमा था। क्योंकि जिजाबाई ने ही उन्हें पाल-पोस कर बड़ा किया था। उनकी अपनी माँ तो उन्हें दो वर्ष का छोड़ कर गुजर गयी थीं।
सम्भाजी अपना दुःख भूल कर फिर से अपने पिता की शासन चलाने में सहायता करने लगे।
किन्तु अकेलापन उन्हें खाये जाता था।
मैं अपना दुःख-सुख किससे कहूँ? आजी स्वर्ग सिधार गयी हैं। मेरी पत्नी निरी बालिका है। विमाता मुझसे स्नेह नहीं करतीं। और पिता जी, वे स्वयं इतने व्यस्त हैं कि क्या कहना।
और सम्भाजी अपने खाली समय में कविता करने लगे।

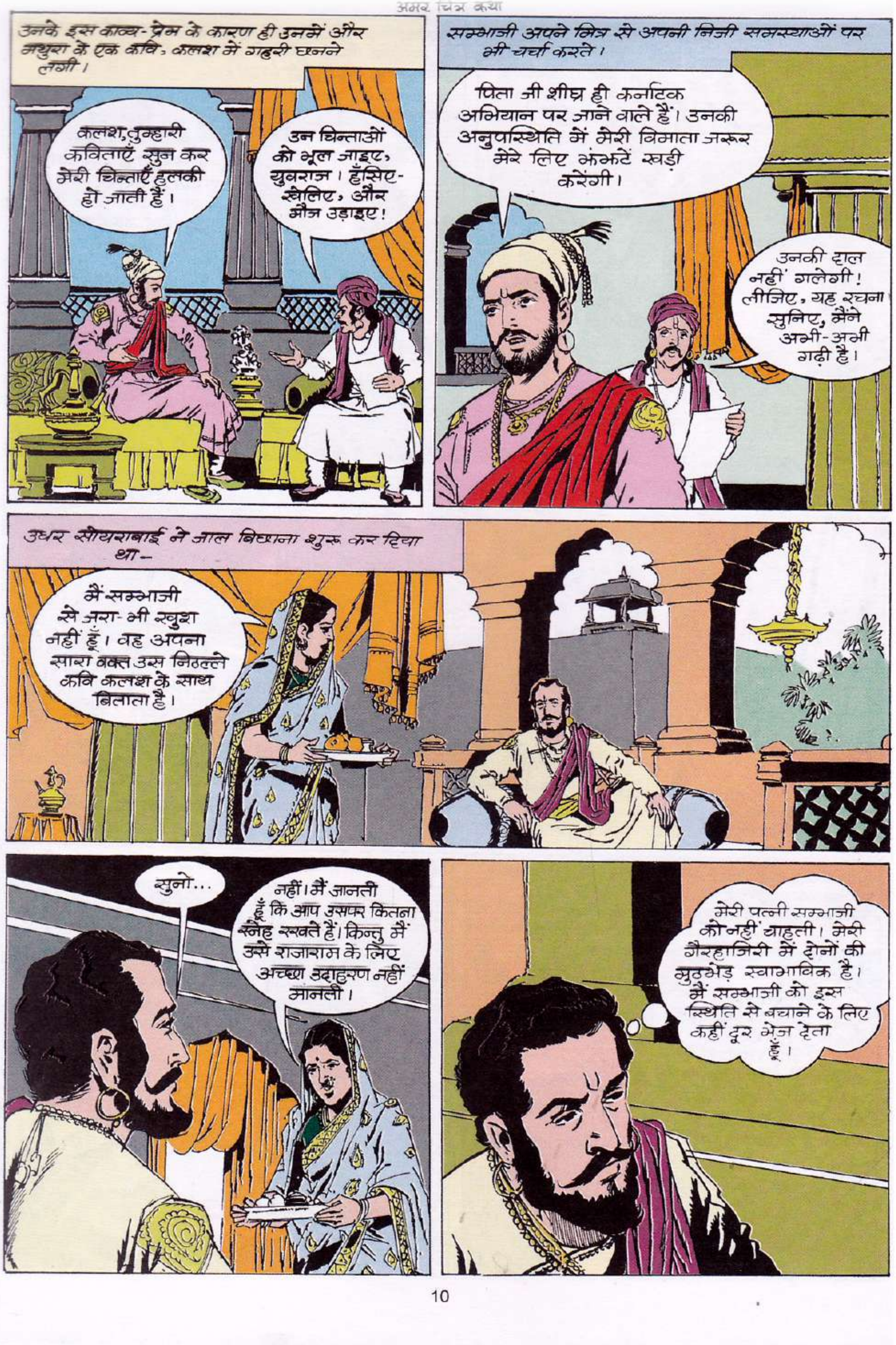
उनके इस काव्य-प्रेम के कारण ही उनमें और मथुरा के एक कवि, कलश में गहरी छनने लगी।
कलश, तुम्हारी कविताएँ सुन कर मेरी चिन्ताएँ हलकी हो जाती हैं।
उन चिन्ताओं को भूल जाइए, युवराज। हँसिए-खेलिए, और मौज उड़ाइए!
सम्भाजी अपने मित्र से अपनी निजी समस्याओं पर भी चर्चा करते।
पिता जी शीघ्र ही कर्नाटक अभियान पर जाने वाले हैं। उनकी अनुपस्थिति में मेरी विमाता जरूर मेरे लिए झंझटें खड़ी करेंगी।
उनकी दाल नहीं गलेगी! लीजिए, यह रचना सुनिए, मैंने अभी-अभी गढ़ी है।
उधर सोयराबाई ने जाल बिछाना शुरू कर दिया था –
मैं सम्भाजी से जरा भी खुश नहीं हूँ। वह अपना सारा वक्त उस निठल्ले कवि कलश के साथ बिताता है।
सुनो...
नहीं। मैं जानती हूँ कि आप उसपर कितना स्नेह रखते हैं। किन्तु मैं उसे राजाराम के लिए अच्छा उदाहरण नहीं मानती।
मेरी पत्नी सम्भाजी को नहीं चाहती। मेरी गैरहाजिरी में दोनों की मुठभेड़ स्वाभाविक है। मैं सम्भाजी को इस स्थिति से बचाने के लिए कहीं दूर भेज देता हूँ।

शिवाजी ने कूच करने से पहले सम्भाजी को बुलवाया–
मैं चाहता हूँ कि तुम शृंगारपुर का प्रशासन सँभालो।
यह मुझे राजधानी से दूर भेज देने का बहाना भर है!
तुमने उत्तर क्यों नहीं दिया, बेटे? तुरंत रवाना हो जाओगे न?
हाँ... जी हाँ, पिता जी!
सम्भाजी ने बाद में कलश के सामने अपना गुस्सा निकाला–
क्या यह उचित है? युवराज के नाते, मेरे पिता की अनुपस्थिति में मेरा स्थान यहाँ, राजधानी में है, न कि सुदूर शृंगारपुर में।
इसके पीछे अवश्य आपकी सौतेली माँ का हाथ है!
मेरे विचार से वह आपके स्थान पर अपने पुत्र को सिंहासन पर बैठाना चाहती है।
मेरे उत्तराधिकार को छीनने की हिम्मत है किसी में? मैं भले ही राजधानी से दूर भेजा जा रहा हूँ, किन्तु मैं अवश्य वापस आऊँगा– सही समय पर!

सम्भाजी अपनी पत्नी येसूबाई के साथ शृंगारपुर चले गये। वहाँ पहुँचने के थोड़े समय बाद ही उन्हें दक्षिण के मुगल सिपहसालार, दिलेर खाँ का एक सन्देश मिला।
येसूबाई, दिलेर खाँ ने कहलाया है कि मैं मुगलों से मिल जाऊँ।
मुगलों से मेल? उसने यह सोचा भी कैसे कि आप इसे मान लेंगे?
जब युवराज को राजधानी से दूर भेज दिया जाता है, लोगों को शक होना स्वाभाविक है।
आप उससे क्या कहेंगे?
तुम्हें मेरा उत्तर नहीं मालूम? पिता जी ने मुझे यहाँ भेजा है, और मैं यहीं रहूँगा- शृंगारपुर में।
शृंगारपुर में सम्भाजी को पुराण, इतिहास, साहित्य और राजनीति-शास्त्र पढ़ने का समय मिला।
उन्होंने एक संस्कृत ग्रन्थ, बुधभूषण की रचना भी की। जब उन्होंने कुछ आरंभिक छन्द येसूबाई को सुनाये-
आपने अपने पिता के 'स्वराज' के आदर्श को कितनी सुन्दर भाषा में व्यक्त किया है। वे इसे सुन कर बहुत खुश होंगे!

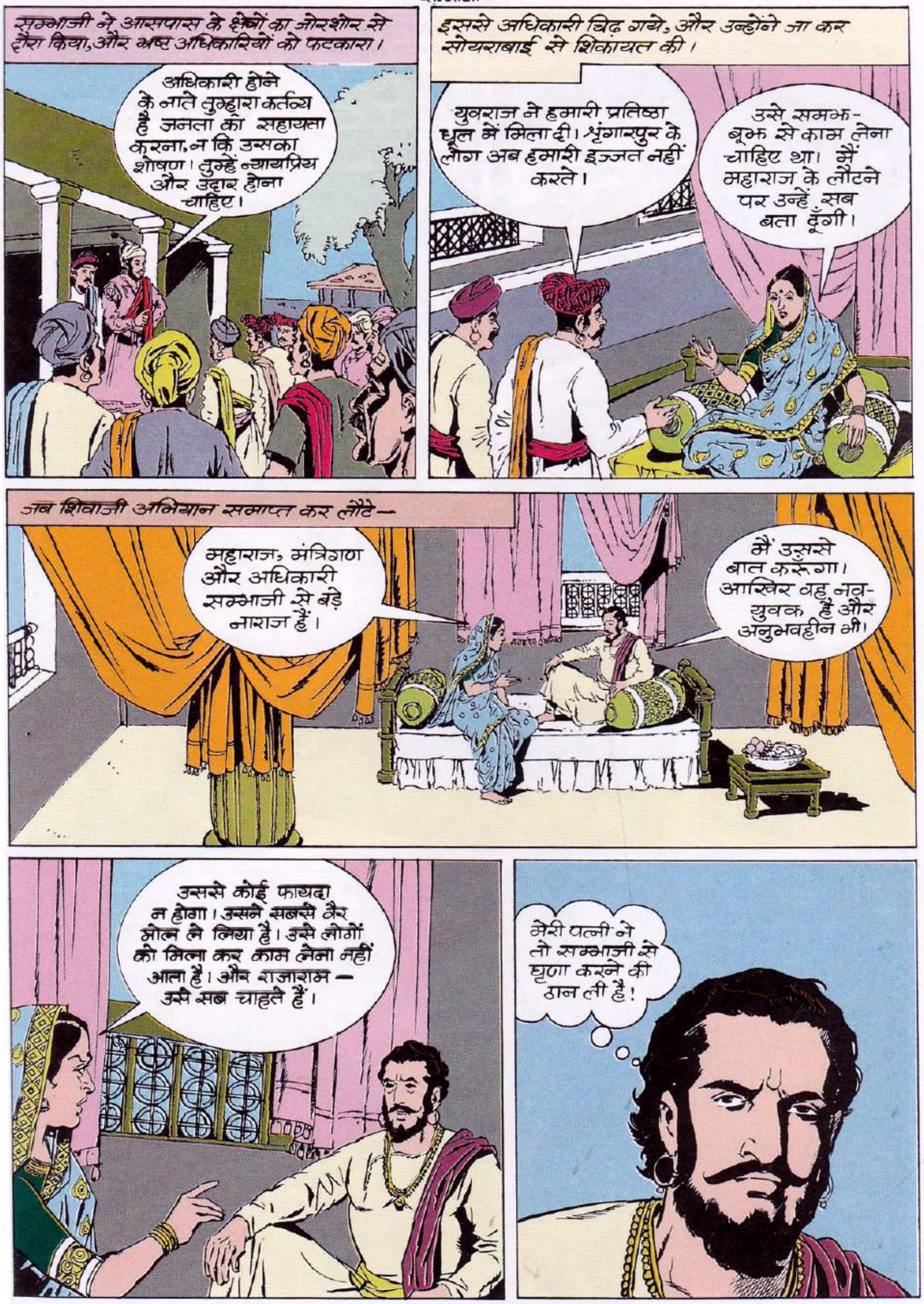
सम्भाजी ने आसपास के क्षेत्रों का जोरशोर से दौरा किया, और भ्रष्ट अधिकारियों को फटकारा।
अधिकारी होने के नाते तुम्हारा कर्तव्य है जनता की सहायता करना, न कि उसका शोषण। तुम्हें न्यायप्रिय और उदार होना चाहिए।
इससे अधिकारी चिढ़ गये, और उन्होंने जा कर सोयराबाई से शिकायत की।
युवराज ने हमारी प्रतिष्ठा धूल में मिला दी। शृंगारपुर के लोग अब हमारी इज्जत नहीं करते।
उसे समझ-बूझ से काम लेना चाहिए था। मैं महाराज के लौटने पर उन्हें सब बता दूँगी।
जब शिवाजी अभियान समाप्त कर लौटे—
महाराज, मंत्रिगण और अधिकारी सम्भाजी से बड़े नाराज हैं।
मैं उससे बात करूँगा। आखिर वह नवयुवक है और अनुभवहीन भी।
उससे कोई फायदा न होगा। उसने सबसे बैर मोल ले लिया है। उसे लोगों को मिला कर काम लेना नहीं आता है। और राजाराम — उसे सब चाहते हैं।
मेरी पत्नी ने तो सम्भाजी से घृणा करने की ठान ली है!

इस बीच शृंगारपुर में सम्भाजी अपने पिता का संदेश आने की राह देख रहे थे।
पिता जी को अभियान से लौटे कितने सप्ताह बीत गये। किन्तु अभी तक उन्होंने मुझे नहीं बुलवाया!
आखिर एक दिन सन्देश आया तो सही, किन्तु वह नहीं जिसका उन्हें इन्तजार था।
येसूबाई, पिता जी चाहते हैं कि हम सज्जनगढ़ जायें। लेकिन क्यों? क्या वे मुझसे मिलना नहीं चाहते?
हमें पिता जी की आज्ञा के बारे में प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं है। वे जानते हैं कि हमारी भलाई किसमें है।
सम्भाजी सज्जनगढ़ चले तो गये लेकिन वे खुश नहीं थे।
येसूबाई, हम लोग यहाँ अपना समय व्यर्थ गँवा रहे हैं और उधर मेरी सौतेली माँ मेरे विरुद्ध पिता जी के कान भर रही है।
किन्तु आपके पिता जी उनकी सुनेंगे नहीं।
वे उसकी बातों में नहीं आयेंगे? मैंने तो सुना है कि वे राज्य को दो भागों में बाँटने की सोच रहे हैं और...
...उसका बड़ा भाग राजाराम को मिलेगा, और मुझे, छोटा भाग जिसमें कर्नाटक शामिल है।
मुझे विश्वास नहीं होता!

मैं भी इस अफवाह पर भरोसा नहीं करना चाहता। फिर भी अगर इसमें जरा भी सचाई है, तो?
इस नाजुक मौके पर दिलेर खाँ ने अपना प्रस्ताव फिर दोहराया।
क्या मैं फिर से इन्कार कर दूं? या...
सम्भाजी की रात बेचैनी में कटी।
पिता जी मुझसे मिलना भी नहीं चाहते! मेरी सौतेली माँ मुझसे नफरत करती है! मंत्रिगण मेरे विरुद्ध हैं।
मैं इन सबसे दूर, बहुत दूर जाना चाहता हूँ! दुर्भाग्य से केवल एक वह, जिससे मुझे लगाव था, आज जीवित नहीं है।
हाय, आजी!

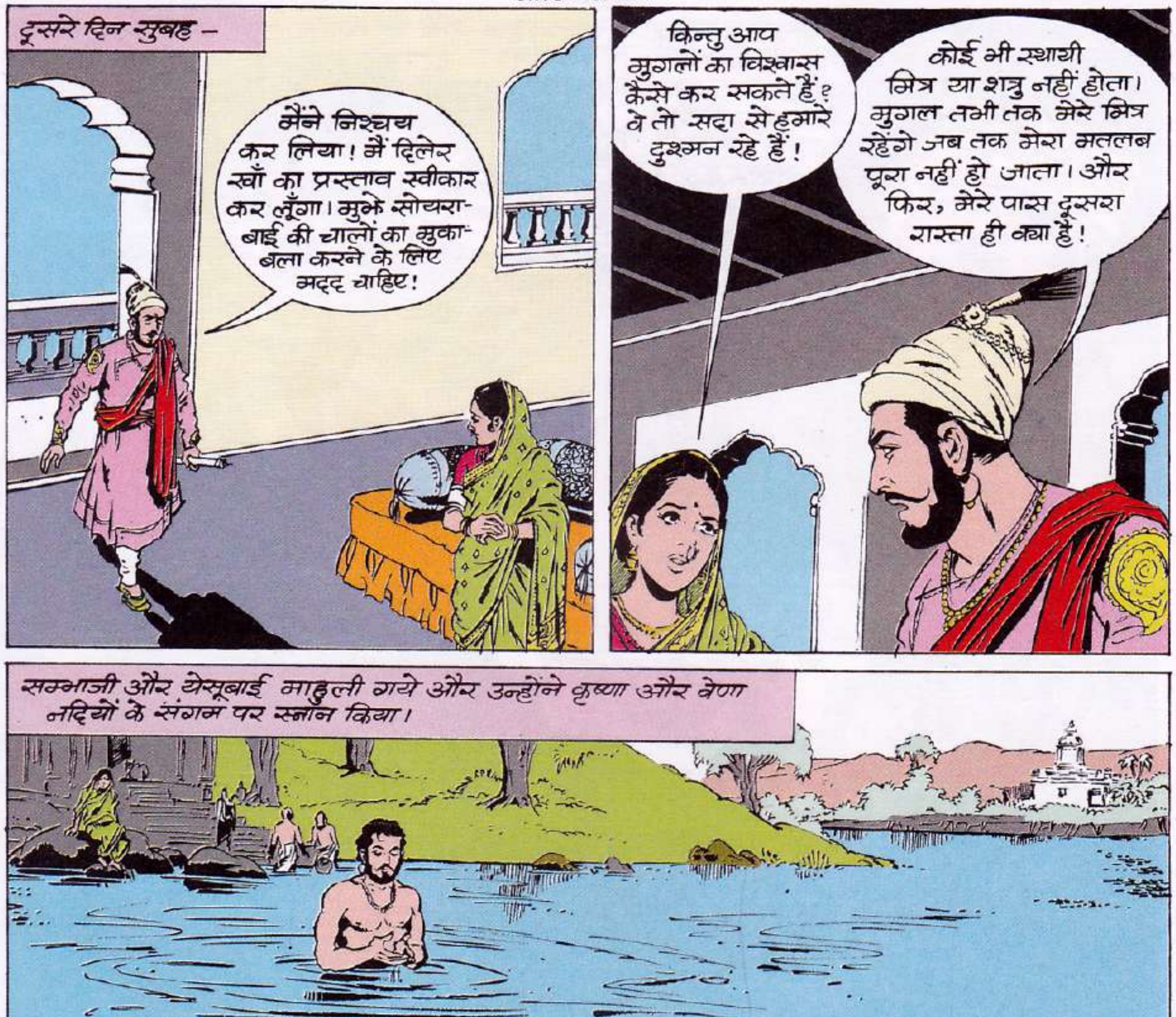
दूसरे दिन सुबह –
मैंने निश्चय कर लिया! मैं दिलेर खाँ का प्रस्ताव स्वीकार कर लूँगा। मुझे सोयराबाई की चालों का मुकाबला करने के लिए मदद चाहिए!
किन्तु आप मुगलों का विश्वास कैसे कर सकते हैं? वे तो सदा से हमारे दुश्मन रहे हैं!
कोई भी स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता। मुगल तभी तक मेरे मित्र रहेंगे जब तक मेरा मतलब पूरा नहीं हो जाता। और फिर, मेरे पास दूसरा रास्ता ही क्या है!
सम्भाजी और येसूबाई माहुली गये और उन्होंने कृष्णा और वेणा नदियों के संगम पर स्नान किया।
बाद में वे मुगल पड़ाव की ओर रवाना हुए। दिलेर खाँ अपने मुकाम से उनका स्वागत करने आया।
सम्भाजी, मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि हर तरह से आपकी मदद करूंगा। हम आपसे दोस्ती करना चाहते हैं।

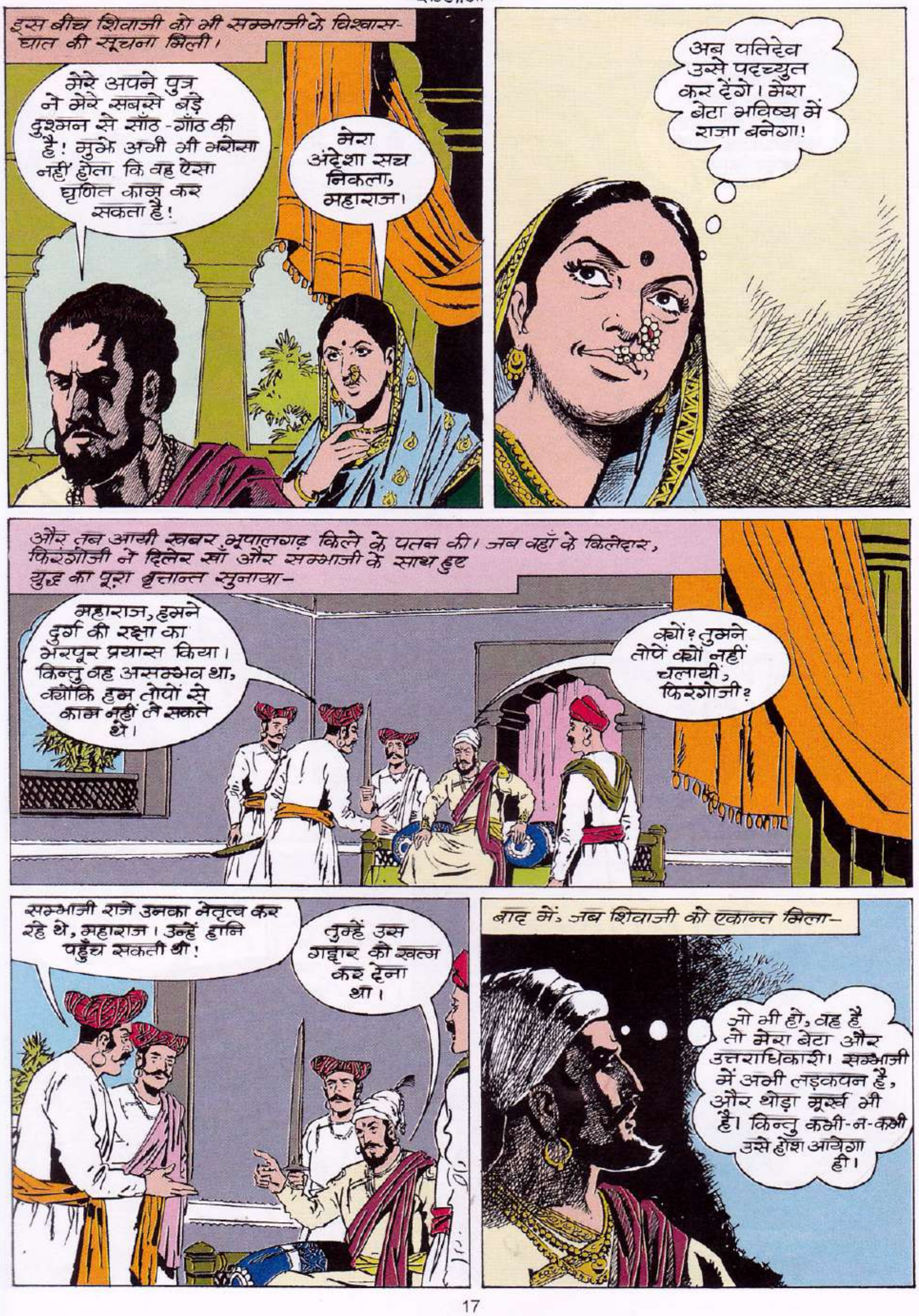
इस बीच शिवाजी को भी सम्भाजी के विश्वास-घात की सूचना मिली।
मेरे अपने पुत्र ने मेरे सबसे बड़े दुश्मन से साँठ-गाँठ की है! मुझे अभी भी भरोसा नहीं होता कि वह ऐसा घृणित काम कर सकता है!
मेरा अंदेशा सच निकला, महाराज।
अब पतिदेव उसे पदच्युत कर देंगे। मेरा बेटा भविष्य में राजा बनेगा!
और तब आयी खबर भूपालगढ़ किले के पतन की। जब वहाँ के किलेदार, फिरंगोजी ने दिलेर खाँ और सम्भाजी के साथ हुए युद्ध का पूरा वृत्तान्त सुनाया–
महाराज, हमने दुर्ग की रक्षा का भरपूर प्रयास किया। किन्तु वह असम्भव था, क्योंकि हम तोपों से काम नहीं ले सकते थे।
क्यों? तुमने तोपें क्यों नहीं चलायीं, फिरंगोजी?
सम्भाजी राजे उनका नेतृत्व कर रहे थे, महाराज। उन्हें हानि पहुँच सकती थी!
तुम्हें उस गद्दार की खत्म कर देना था।
बाद में, जब शिवाजी को एकान्त मिला–
जो भी हो, वह है तो मेरा बेटा और उत्तराधिकारी। सम्भाजी में अभी लड़कपन है, और थोड़ा मूर्ख भी है। किन्तु कभी-न-कभी उसे होश आयेगा ही।

उधर दिलेर खाँ और सम्भाजी बीजापुर की ओर बढ़ रहे थे।
बीजापुर का सुल्तान महज बच्चा है, और उसका अभिभावक सिद्दी मसूद काफी कमजोर है।
बीजापुर जीतना हमारे बायें हाथ का खेल होगा।
तभी उन्हें चिन्तित करने वाला समाचार मिला।
शिवाजी ने मसूद की सहायता को दो दस्ते भेजे हैं...
कोई बात नहीं। हम आगे बढ़ते जायेंगे।
किन्तु दिलेर खाँ को शीघ्र ही अपनी योजना बदलनी पड़ी।
आपके वालिद ने हमारे इलाके को तहस-नहस करने को फौज भेजी है।
मैंने तय किया है कि मैं भी उनका ध्यान बँटाने के लिए मराठा इलाके पर हमला करूँगा। सबसे पहले हम पन्हाला पर कब्जा करेंगे।
अपनी हाल की हार से खीज कर दिलेर खाँ ने अपना सारा गुस्सा रास्ते की निर्दोष जनता पर उतारा।
अगर ये हमें हर्जाना चुकाने से इन्कार करें, तो कैद कर लो सबको!
हाय, मेरे बच्चे! उन्हें तो छोड़ दो!

हुजूर, कुछ साहूकार और अमीर लोग तिकोटा में जा छुपे हैं।
तब चलो तिकोटा!
तिकोटा में–
बताओ, तुमने सारा पैसा कहाँ छुपाया है– वर्ना अपनी मौत आयी ही समझो!
इन बेचारों को छोड़ दो, दिलेर खाँ!
इतने नर्म-दिल होना ठीक नहीं, सम्भाजी! अपनी सल्तनत कायम करना है, तो पत्थर का कलेजा होना चाहिए!
अथनी पहुँच कर दिलेर खाँ के सिपाही फिर लूट-मार करने लगे। लोगों ने सम्भाजी से फरियाद की।
महाराज शिवाजी की दोहाई है! हमें बचाइए!
मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ! मैंने सपने में भी इस खून-खराबे की कल्पना नहीं की थी।
सम्भाजी दिलेर खाँ के तम्बू में आ पहुँचे।
दिलेर खाँ, तुम्हें यह सब रोकना होगा– इसी वक्त!

मुझे हुक्म देनेवाले तुम कौन होते हो? मैं यहाँ का मालिक हूँ!
मैं तुम्हारा दोस्त हूँ, तुम्हारा मातहत नहीं!
और मुझे अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए यहाँ से चले भी जाना पड़ा, तो हिचकूँगा नहीं!
बेचारा शाहजादा! इसे क्या मालूम कि मुगल खेमे से बाहर जाना उतना आसान नहीं है जितना उसमें आना!
सम्भाजी के डेरे में—
मुगलों से साँठ-गाँठ कर के मैंने भारी भूल की। अब मुझे मालूम हुआ कि दिलेर खाँ मुझे हर्गिज़ यहाँ से जाने नहीं देगा!
तब तो उसका फन्दा कसने से पहले हमें यहाँ से चल देना चाहिए।
लेकिन हम जायें कहाँ?
आपके पिता जी के पास। वे आपको जरूर माफ कर देंगे।
उस रात सम्भाजी और येसूबाई सैनिकों के भेष में मुगल खेमे से भाग निकले।

पन्हाला में —
हमारे युवराज लौट आये।
शिवाजी रायगढ़ में थे। वहाँ से अपने बेटे से मिलने आये। पन्हाला में पिता-पुत्र का मिलन हुआ।
तुम्हें मेरे शत्रुओं से साँठ-गाँठ नहीं करनी चाहिए थी। वह भी उस राज्य की खातिर, जो मेरे बाद हर हाल में तुम्हें ही मिलता।
पिता जी, बीता हुआ समय एक बुरा सपना था। कृपया उसे भूल जाइए। मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ।
शिवाजी अपने बेटे के साथ कुछ हफ्ते रुके। फिर उन्हें राजाराम के विवाह के कारण रायगढ़ लौटना पड़ा।
अब मुझे जाना है। किन्तु एक बात याद रखना, मेरा निर्मित राज्य तुम्हारे लिए ही है।
मैं इस दायित्व के योग्य बनूँगा, पिता जी!
येसूबाई, देखा तुमने? पिताजी ने हमें राजाराम के विवाह में सम्मि-लित होने को नहीं कहा?
शायद उनके विचार से हमारे रायगढ़ लौटने के लिए अभी उपयुक्त समय नहीं है।
तुम्हारा ख्याल ठीक है। मेरी सौतेली माँ यह बात पसन्द नहीं करती।

और उन दिनों सोयराबाई शिवाजी की राय अपने पक्ष में करने के लिए जी-जान से जुटी थी।
महाराज, मेरे बेटे को उत्तराधिकारी होना चाहिए, न कि सम्भाजी को!
किन्तु राजाराम अभी केवल दस वर्ष का है!
हाँ, वह छोटा जरूर है किन्तु सारे मंत्रिगण उससे स्नेह करते हैं। और वह आपके बड़े सपूत की तरह मुगलों से मिल नहीं गया था!
शिवाजी मौन रहे।
मुगलों से चार दिनों की मैत्री से ही सम्भाजी के चरित्र पर धब्बा लग गया है। वह इस कलंक से पूरी तरह कभी उबर नहीं पायेगा, और उसके विरोधी इस बात को खूब उछालेंगे।
किन्तु अन्तिम निर्णय लेने के पहले ही शिवाजी बीमार पड़ गये।
मुझे सम्भाजी से यह खबर गुप्त रखनी होगी। और साथ ही अपने बेटे का सिंहासन पर अधिकार पक्का कर लेना होगा।
उसने पन्हाला के सूबेदार को एक पत्र लिखा।
यह पत्र ले जा कर पन्हाला के सूबेदार को ही देना, और किसी को नहीं! और ध्यान रहे, यह सम्भाजी के हाथों में न पड़ने पाये।

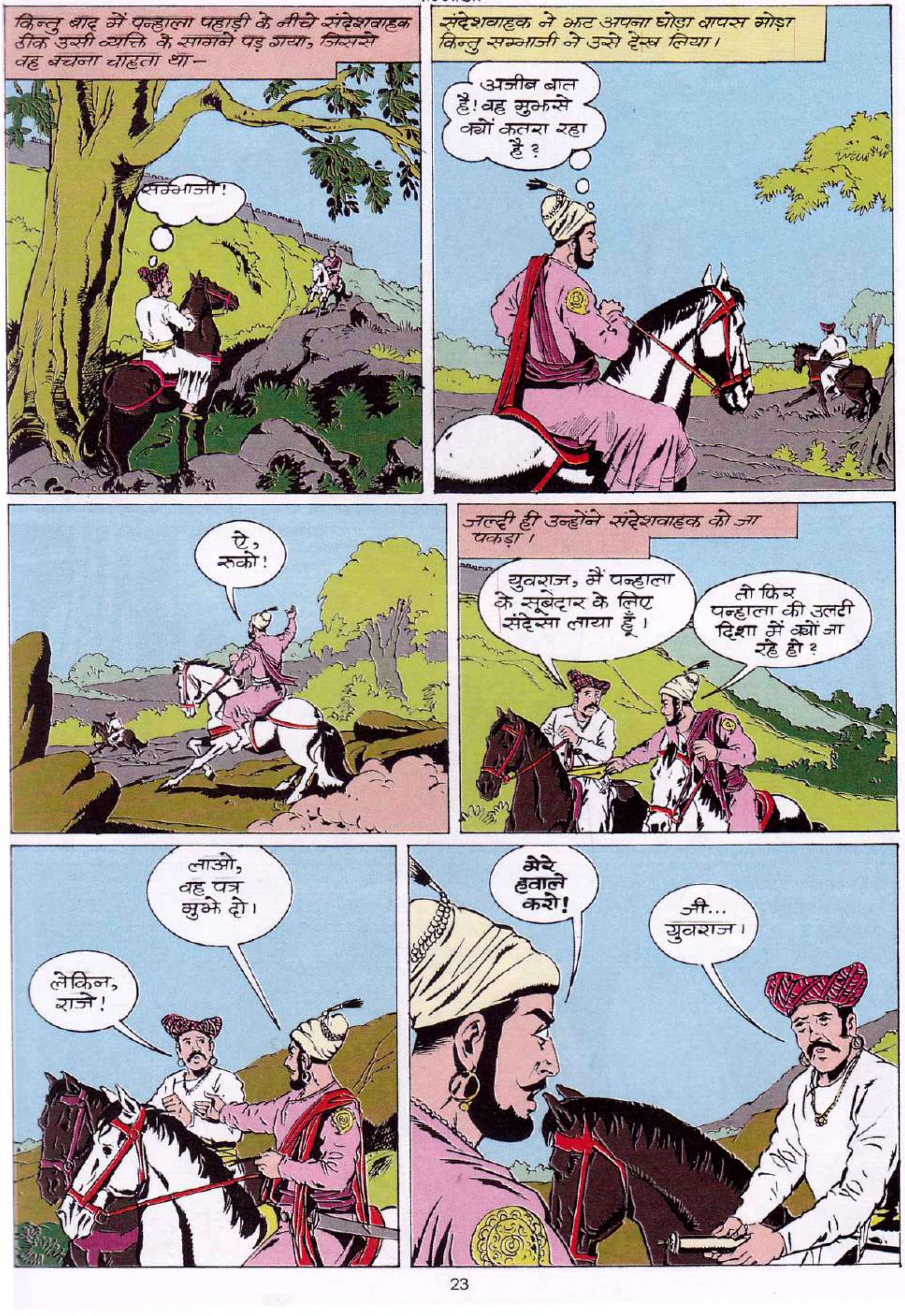
किन्तु बाद में पन्हाला पहाड़ी के नीचे संदेशवाहक ठीक उसी व्यक्ति के सामने पड़ गया, जिससे वह बचना चाहता था–
सम्भाजी!
संदेशवाहक ने झट अपना घोड़ा वापस मोड़ा किन्तु सम्भाजी ने उसे देख लिया।
अजीब बात है! वह मुझसे क्यों कतरा रहा है?
ऐ, रुको!
जल्दी ही उन्होंने संदेशवाहक को जा पकड़ा।
युवराज, मैं पन्हाला के सूबेदार के लिए संदेसा लाया हूँ।
तो फिर पन्हाला की उलटी दिशा में क्यों जा रहे हो?
लाओ, वह पत्र मुझे दो।
लेकिन, राजे!
मेरे हवाले करो!
जी... युवराज।

पिता जी बीमार हैं!
"... शंभु राजे पन्हाला छोड़ने न पायें..."
मेरी सौतेली माँ नहीं चाहती कि मुझे पिता जी की बीमारी के बारे में पता लगे। उनकी सेवा करने के स्थान पर वह अपने बेटे के फायदे के बारे में सोच रही है।
उधर रायगढ़ में मंत्रियों की बैठक चल रही थी –
छत्रपति अपना उत्तराधिकारी घोषित किये बिना ही चल बसे। अब सही व्यक्ति का चुनाव मंत्रि-परिषद् की जिम्मेदारी है।
हमें किसे छत्रपति बनाना चाहिए? गुस्सैल, बिगड़े हुए, गद्दार सम्भाजी को, या फिर युवक राजाराम को?
अपने दोनों पुत्रों के बारे में स्वयं छत्रपति की राय क्या थी, रानी साहिब?

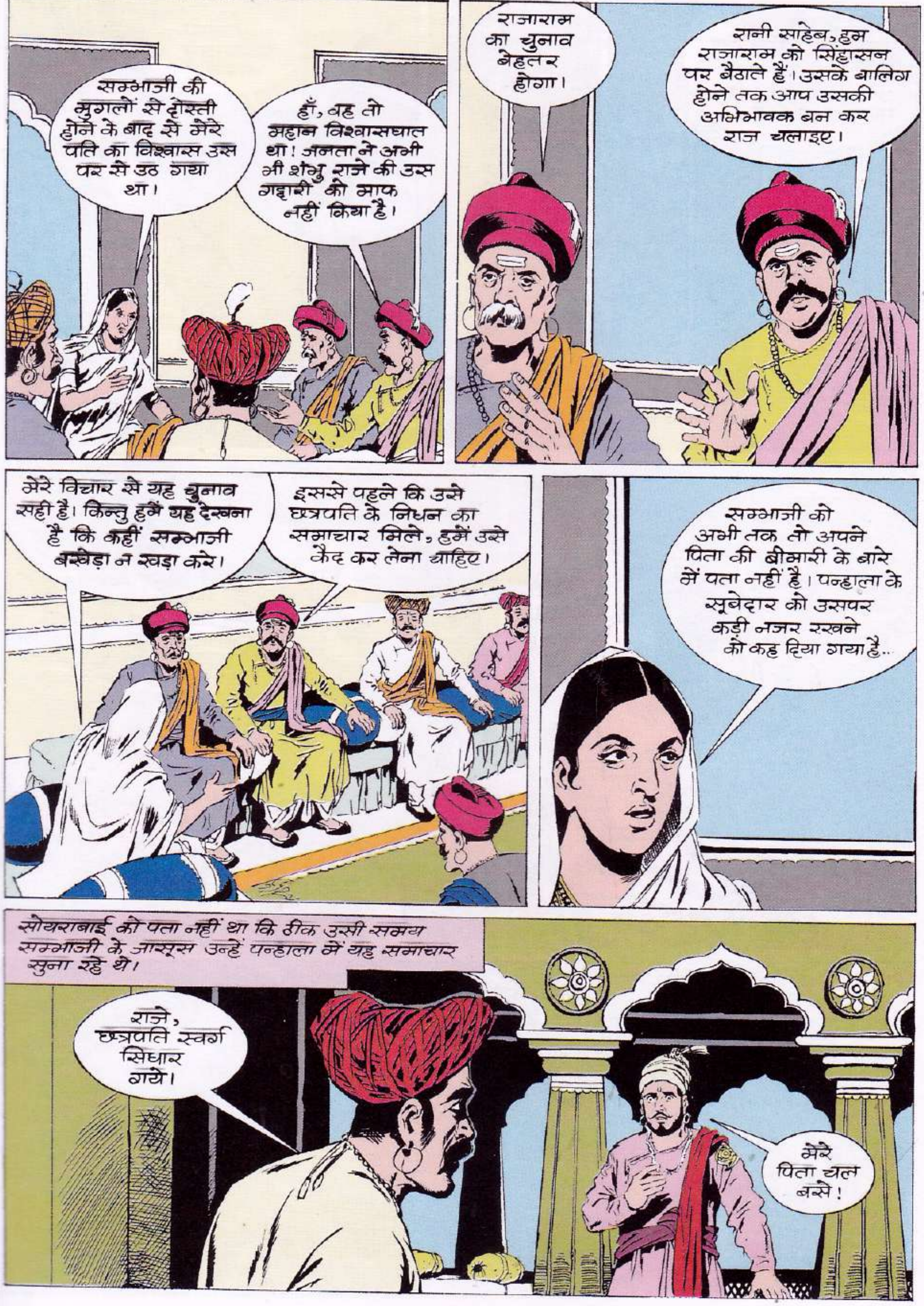
सम्भाजी की मुगलों से दोस्ती होने के बाद से मेरे पति का विश्वास उस पर से उठ गया था।
हाँ, वह तो महान विश्वासघात था! जनता ने अभी भी शंभु राजे की उस गद्दारी को माफ नहीं किया है।
राजाराम का चुनाव बेहतर होगा।
रानी साहेब, हम राजाराम को सिंहासन पर बैठाते हैं। उसके बालिग होने तक आप उसकी अभिभावक बन कर राज चलाइए।
मेरे विचार से यह चुनाव सही है। किन्तु हमें यह देखना है कि कहीं सम्भाजी बखेड़ा न खड़ा करे।
इससे पहले कि उसे छत्रपति के निधन का समाचार मिले, हमें उसे कैद कर लेना चाहिए।
सम्भाजी को अभी तक तो अपने पिता की बीमारी के बारे में पता नहीं है। पन्हाला के सूबेदार को उसपर कड़ी नजर रखने को कह दिया गया है...
सोयराबाई को पता नहीं था कि ठीक उसी समय सम्भाजी के जासूस उन्हें पन्हाला में यह समाचार सुना रहे थे।
राजे, छत्रपति स्वर्ग सिधार गये।
मेरे पिता चल बसे!

और राजाराम का राजतिलक किया गय है। दो मंत्री मोरोपन्त और अप्पाजी दत्तो पन्हाला आ रहे हैं...
हाँ? आगे बोलो।
...आपको गिरफ्तार करने।
बाद में–
मैं अपने स्वर्गवासी पिता की मृत्यु पर आँसू बहाऊँ या अपने खोये हुए अधिकार पर?
खोया हुआ अधिकार? खोया हुआ, नहीं नहीं! हर्गिज़ नहीं! सोयरा-बाई की मनमानी नहीं चलेगी!
सम्भाजी ने पहले अपने दिवंगत पिता के लिए प्रार्थना की...

... फिर अपने उत्तराधिकार को प्राप्त करने के लिए ठोस कदम उठाया। उन्होंने सेनापति, हम्बीरराव मोहिते को एक पत्र लिखा।
सिंहासन पर मेरा न्यायोचित अधिकार है। राजाराम जैसे अबोध बालक को राजा बनाना इस विशाल राष्ट्र के हित में नहीं होगा।
उधर, जब लोगों ने राजाराम के राज्याभिषेक की खबर सुनी –
किन्तु गद्दी तो सम्भाजी राजे को मिलनी चाहिए थी। बड़े बेटे तो वे हैं!
पन्हाला की जनता और सैनिकों ने सम्भाजी का समर्थन किया।
हम आपके साथ हैं, सम्भाजी राजे!
हमारे छत्रपति आप ही होंगे!
राजाराम के राज्याभिषेक की उपेक्षा करते हुए सम्भाजी ने छत्रपति के कार्यों की बागडोर सँभाल ली।
सब सूबेदारों को आदेश दो कि अपने-अपने बही-खाते ले कर मुझसे पन्हाला में आ कर मिलें।
सम्भाजी ने सैनिकों को दो माह का वेतन पेशगी दे कर अपनी स्थिति और मजबूत बना ली।
सम्भाजी की जय!

इस बीच हम्बीरराव को सम्भाजी का पत्र मिला। वह तभी एक दौरे से लौटा था। वह मोरोपन्त और अण्णाजी दत्तो से मिला।
राजाराम का चुनाव ठीक नहीं है। क्या वह मुगलों का सामना कर पायेगा?
हम्बीरराव, क्या तुम्हारी राय में सम्भाजी विश्वसनीय है? वह तो मुगलों से जा मिला था।
हमें सिर्फ इस बात को सम्भाजी के विरुद्ध रटना नहीं चाहिए। आखिर स्वयं छत्रपति ने उसे माफ कर दिया था।
लेकिन छत्रपति उससे बहुत नाराज थे।
हम्बीरराव, हमने राजाराम को गद्दी पर बैठा दिया है। अब हम पीछे कैसे हट सकते हैं?
मंत्री रायगढ़ से पन्हाला के लिए रवाना हुए...
...किन्तु अपने गन्तव्य पर पहुँचने से पहले ही उन्हें हम्बीरराव के आदमियों ने घेर लिया।
हम्बीरराव, तुम यह नहीं कर सकते!
मुझे खेद है, पर मुझे तुम्हें कैद करना पड़ेगा।

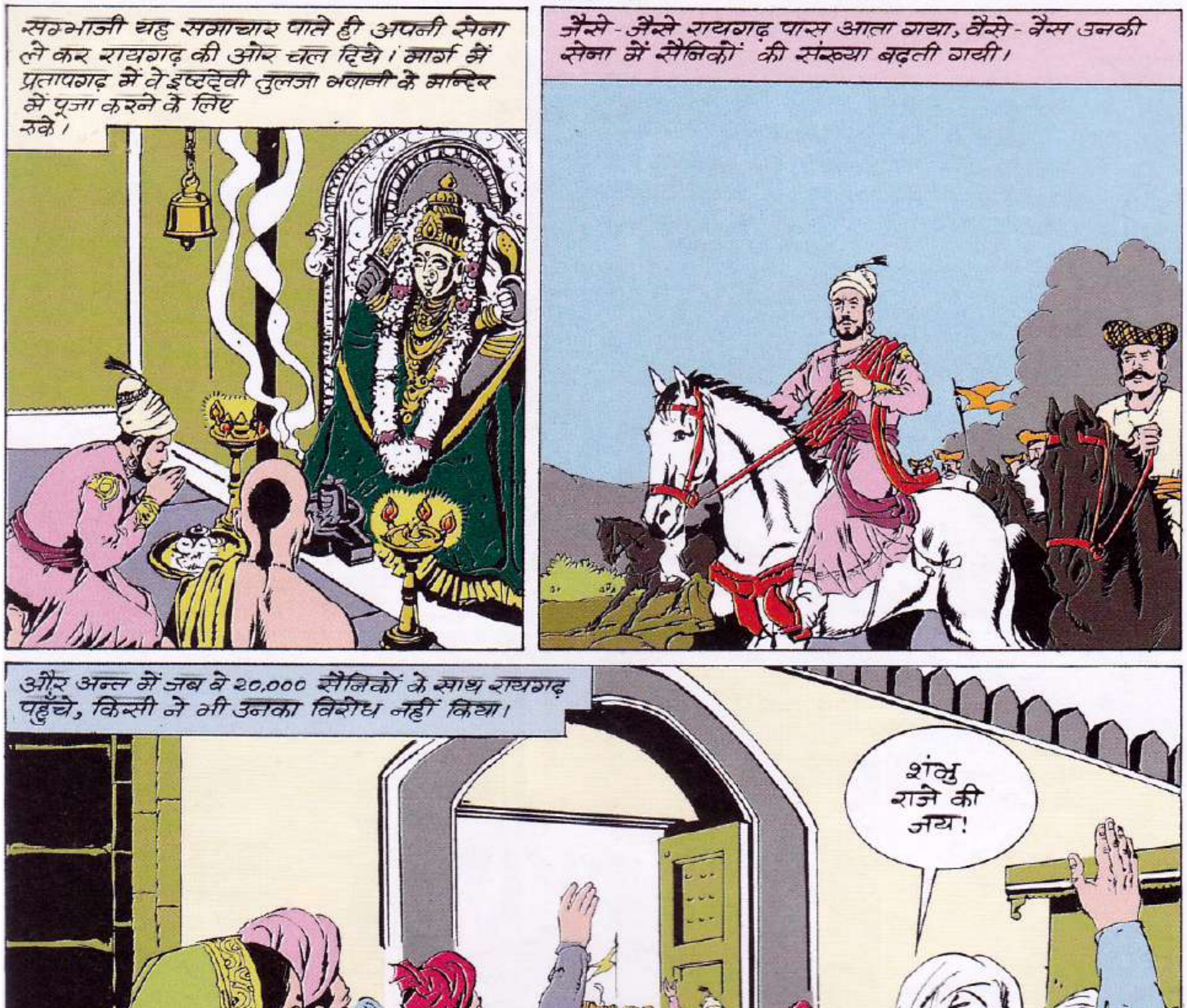
सम्भाजी यह समाचार पाते ही अपनी सेना ले कर रायगढ़ की ओर चल दिये। मार्ग में प्रतापगढ़ में वे इष्टदेवी तुलजा भवानी के मन्दिर में पूजा करने के लिए रुके।
जैसे-जैसे रायगढ़ पास आता गया, वैसे-वैसे उनकी सेना में सैनिकों की संख्या बढ़ती गयी।
और अन्त में जब वे 20,000 सैनिकों के साथ रायगढ़ पहुँचे, किसी ने भी उनका विरोध नहीं किया।
शंभु राजे की जय!
हम्बीरराव, तुम्हारी मदद के लिए तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूँ!
महाराज, मुझे लज्जित न करें। मैंने केवल अपना कर्तव्य निबाहा है।

अब उनका पुराना मित्र, कलश उनसे मिलने आया-
कलश, अब मुझे बड़ा अरुचिकर काम करना है, षड्यन्त्र करने वालों को बन्दी बनाने का। विशेषत: राजाराम पर मुझे तरस आता है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह बेकसूर है।
किन्तु आपको उसे भी कैद करना पड़ेगा...
... वर्ना आपके उत्तराधिकार को खतरा पहुँचाने के लिए उसका मोहरे की तरह उपयोग किया जायेगा।
हाँ, तुम्हारा अनुमान सही है, कलश।
सम्भाजी ने अगले कुछ माह अपनी स्थिति मजबूत बनाने में लगाये। और फिर अपने राजतिलक के अवसर पर उन्होंने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया।
कलश, मैंने साजिश करनेवालों को रिहा करने का फैसला किया है।
काश, वे आपकी उदारता का उपकार मानें।
सम्भाजी ने मोरोपन्त के बेटे नीलोपन्त को प्रधान मंत्री नियुक्त किया। अन्य कई षड्यन्त्रकारियों को उनके पद वापस दिये गये।
१६ जनवरी, सन् १६८१ को सम्भाजी का राजतिलक समारोह हुआ। छत्रपति शिवाजी महान के पुत्र, सम्भाजी नये छत्रपति बने।
मराठा इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ।
श्री शंभो
शिवजातस्य
मुद्राद्यौरिव राजते
यदंकसेविनी
लेखा वर्तते
कस्य नोपरि
" यह शिवाजी के पुत्र सम्भाजी की राजमुद्रा है। इससे शोभित हर आदेश सदा-सर्वदा अटल रहेगा। "

संभाजी

समस्त मराठा राज्य हैरान रह गया, जब शिवाजी के पुत्र संभाजी ने मुगल सेना में शामिल हुए, जो शिवाजी की सबसे बड़ी दुश्मन थे । संभाजी का बचपन कठिन था। उनके पिता उनकी देखभाल के लिए बहुत व्यस्त थे और उनकी माँ की मृत्यु हो गई जब वह केवल दो वर्ष के थे। युवा संभाजी का मुख्य समर्थन उनकी दादी से आया था। जब वह मर गई, तो वह प्यार और देखभाल से वंचित रहे। मामलों को बदतर बनाने के लिए, उनकी सौतेली माँ अपने बेटे को अगला शासक बनाने के लिए अभियान चला रही थी, जो संभाजी के खिलाफ शिवाजी के भटकाने की कोशिश कर रही थी। यह अमर चित्र कथा उन घटनाओं का पता लगाती है जो इस बुद्धिमान और सिर्फ मराठा शासक के राज्याभिषेक तक ले गई।

ए सी के: के अन्य बहादुर दिल:

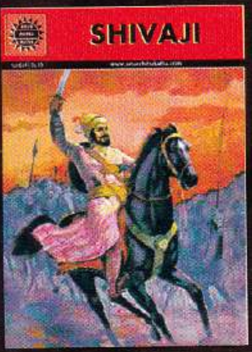

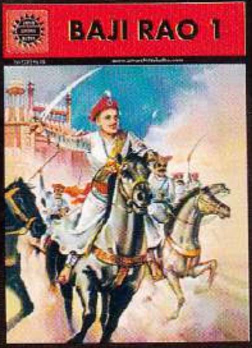

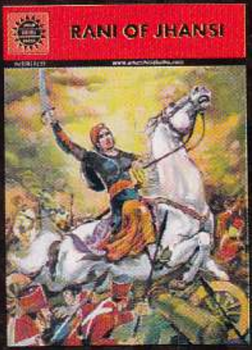

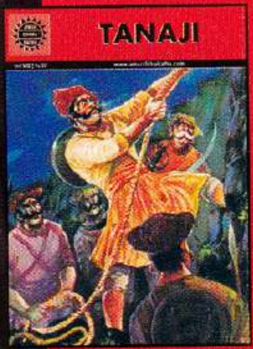

और भी देखें:

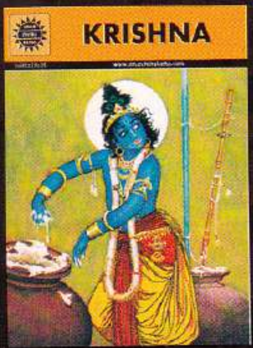

महाकाव्यों और पौराणिक कथा

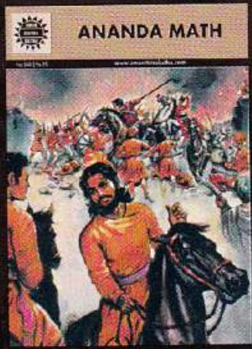

भारतीय क्लासिक्स

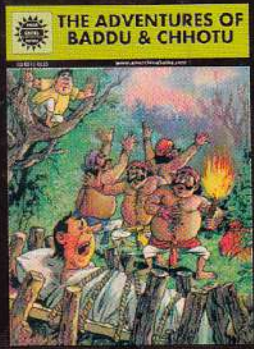

दंतकथाएँ और हास्य कथाएँ

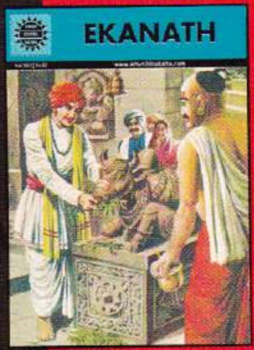

दूरदर्शी

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-67-8